कविता

14

मनोबल

अंशुमान दुबे *

अपने मनोबल को इतना सशक्त कर,
कठिनाई भी आने से जाए डर।
आत्मविश्वास रहे तेरा हमसफर,
बड़े-बड़े कष्ट न डाल पाएँ कोई असर।।
हौसला अपना बुलंद कर लो,
साहस व हिम्मत को संग कर लो।
निर्भय होकर आत्मविश्वास से बढ़ो,
संयम व धैर्य से सफलता की सीढ़ी चढ़ो।
जब कभी कर्त्तव्य के मार्ग पर,
विपत्ति व विघ्न तुम्हें सताएँगे।
जब कभी हार कर या विवश होकर,
निराशा के बादल छा जाएँगे।
हार न मानने का जज़्बा तुम्हें उठाएगा,
तुम्हारा अडिग हौसला तुम्हें बढ़ाएगा।
आखिरकार देखना तुम्हारे आगे,
धरती हिल जाएगी, आसमां झुक जाएगा।

*इस कविता के रचयिता (सोलह वर्ष) स्व. अंशुमान दुबे क्रोनिक इन्फ्लेमेट्री डिमायलिजेटेड पोलिमोपैथी (CIDP) बीमारी से ग्रस्त थे। माँसपेशियों की लाइलाज बीमारी से ग्रस्त होने पर भी अपने मन में उठे भावों को अपने छोटे भाई और माँ की मदद से कविता के रूप में उतारना शुरू किया। छोटी-सी उमर-कविता संग्रह में पच्चीस हिंदी और पाँच अँग्रेज़ी की कविताएँ हैं। इनकी कविताओं में कहीं भी दर्द, पीड़ा, हताशा या निराशा की झलक नहीं मिलती। जीवटता, साहस, हौसला, आत्मविश्वास का भाव कविता की हर पंक्ति में झलकता है। अंशुमान सेंट पॉल स्कूल, इंदौर के मेधावी छात्र थे।

भय–विस्मय का अब अंत करो,
आते हुए दु:खों को पसंद करो।
कर्म ज़्यादा व बातें चंद करो,
हौसला अपना इतना बुलंद करो।

दु:खों का पहाड़ टूटने पर भी,
सीना ताने खड़ा रह पाएगा।
दर्द का अंबार फूटने पर भी,
सर उठाकर सतत् चलता जाएगा।

जो अपने पक्के इरादों के आगे,
मुसीबतों के घुटने टिका जाएगा।
वही सुदृढ़ मनोबल वाला मनुष्य,
जिंदगी की यह जंग जीत पाएगा।